बाल चित्र रामायण

प्रथम भाग

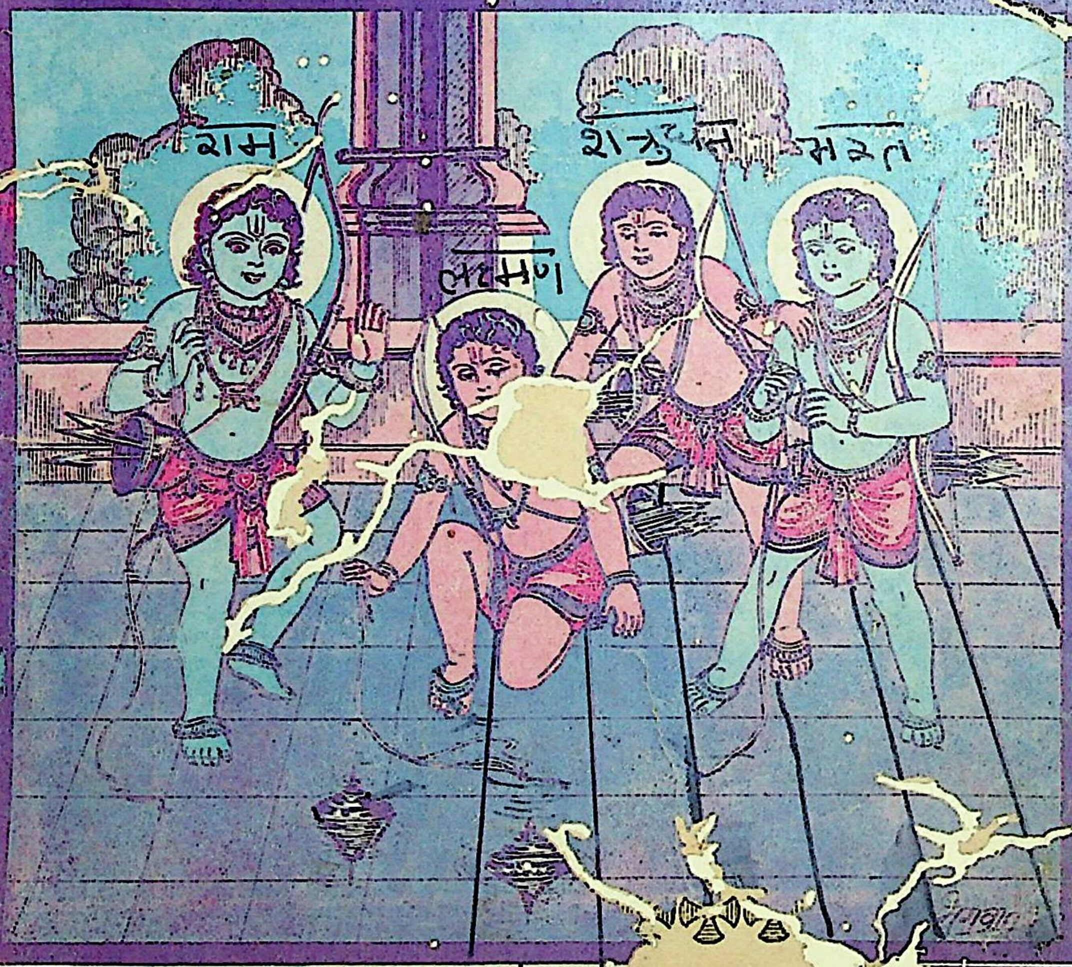

गीता प्रेस गोर

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

tri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

श्रीहरिः

बाल-चित्र-रामायण

[पहला भाग]

मुद्रक तथा प्रकाशक

मोतीलाल जालान, गीताप्रेस, गोरखपुर

सं० २०११ से २०२४ तक ३,२०,०००
सं० २०२६ सोलहवाँ संस्करण ३०,०००
सं० २०२८ सतरहवाँ संस्करण ५०,०००
कुल ४,००,०००

मूल्य तीस पैसे

पता—गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

बा० चि० रा० भा० १.१—

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

* श्रीराम *

पोथीकी जानकारी

भगवान श्रीरामचन्द्र हमारी भारतीय संस्कृतिके प्राण हैं। ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो रामका नाम न जानता हो। छोटे बच्चे रामकी जीवन-लीलाओंको जान लें तथा बोलचालकी बोलीमें लीलाकी तुकबंदी याद कर लें तो उनको सहज ही रामके जीवनकी जानकारी हो सकती है और वे स्वयं पदोंको बोलकर तथा दूसरोंको सुनाकर आनन्द पा सकते हैं। उनके जीवन-निर्माणमें भी इससे बड़ी सहायता मिल सकती है। इसी उद्देश्यसे यह चित्रोंमें रामचरित्र दो भागोंमें छापा गया है। आशा है, इससे हमारे बालक लाभ उठायेंगे। यह पहला भाग है। इसमें लीलाके ४८ सादे चित्र हैं और एक सुन्दर रंगीन चित्र। किस चित्रमें कौन-सी लीला है, यह उसके नीचेके पदमें लिख दिया गया है।

होली-पर्व २०१० वि०

हनुमानप्रसाद पोद्दार
कल्याण-सम्पादक

eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

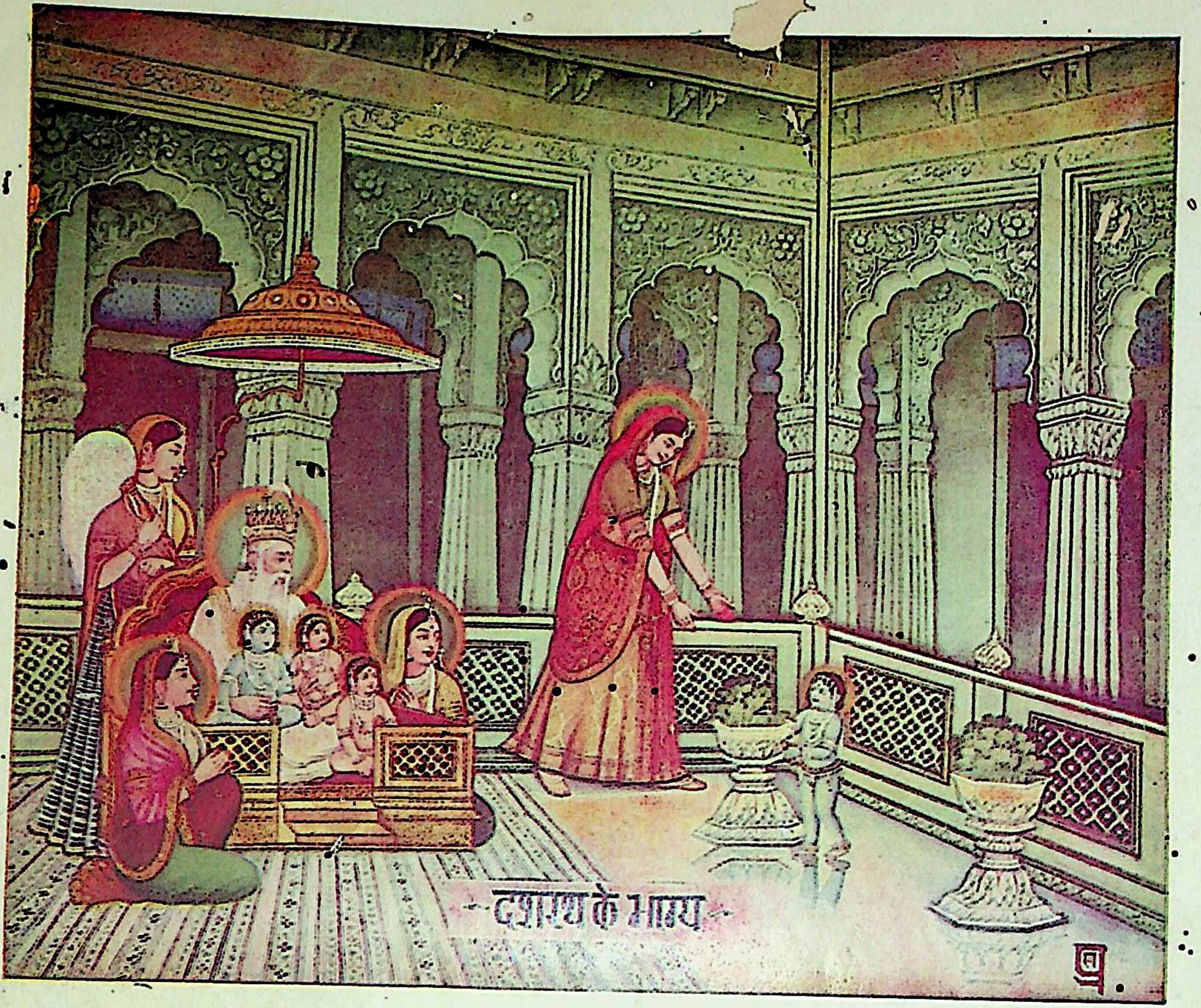

दशरथ के भाग्य

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

माताओंकी गोदमें

नृप दशरथकी गोदी राम। कौशल्याकी भरत ललाम॥
गोद सुमित्रा लक्ष्मण लाल। शत्रुशमन कैकयी निहाल॥

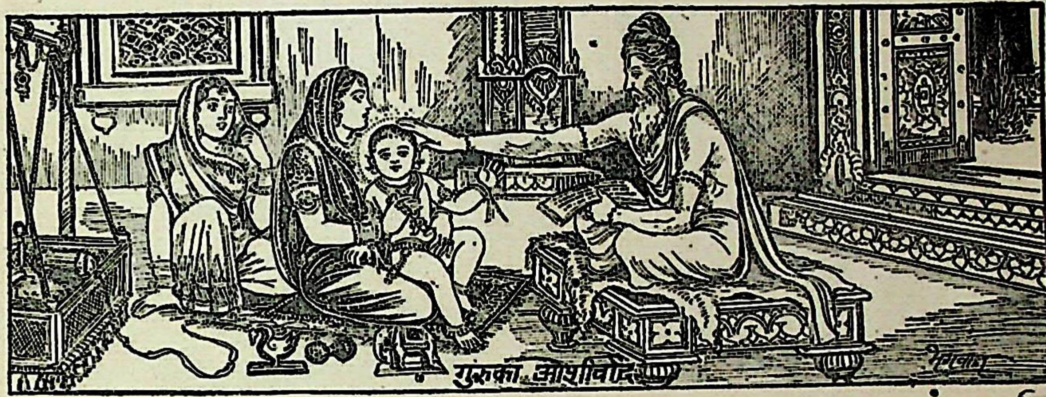

गुरुका आशीर्वाद

अनमन राम दुखी सब माता। आये गुरु वशिष्ठ सुखदाता॥
रक्षा बाँधि धरे सिर हाथ। दीन्ह असीस मुदित रघुनाथ॥

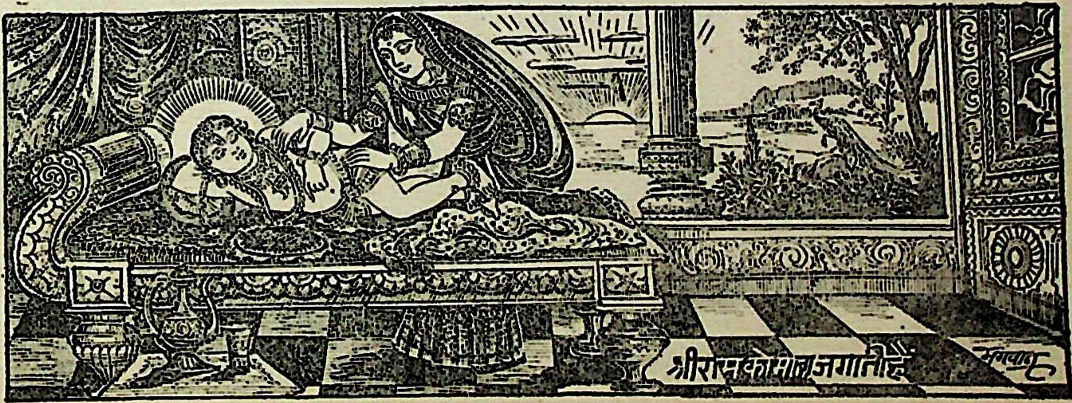

श्रीरामको माता जगाती हैं

जागहु लाल जाय बलि मैयां। जागीं चिड़िया जागीं गैया॥
बन्दी द्वार सुयश सब गावैं। उठहु राम मैया सुख पावैं॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

भरत, शत्रुहन, लक्ष्मण राम । खेल रहे नृप दशरथ-धाम ॥
तीनों माता भर आनन्द । देख रही हैं रघुकुलचन्द ॥

मातु कौशिला शीश झुकाये । हरि पूजे, नैवैद्य चढ़ाये ॥
हाथ जोड़ माँगें वरदान । राम सुखी हों, हे भगवान ॥

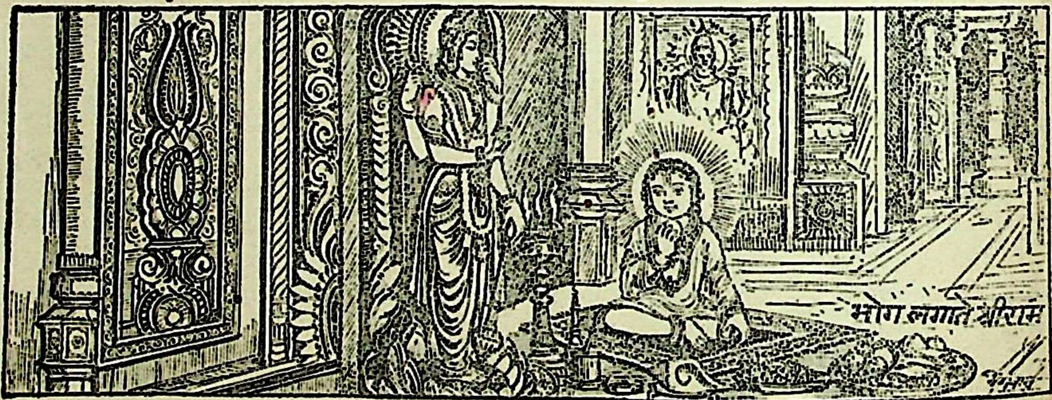

मन्दिर भोजन करते राम । मैया चकित देख यह काम ॥
अभी पालने था पौढ़ाया । कैसे लाल यहाँ चल आया ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

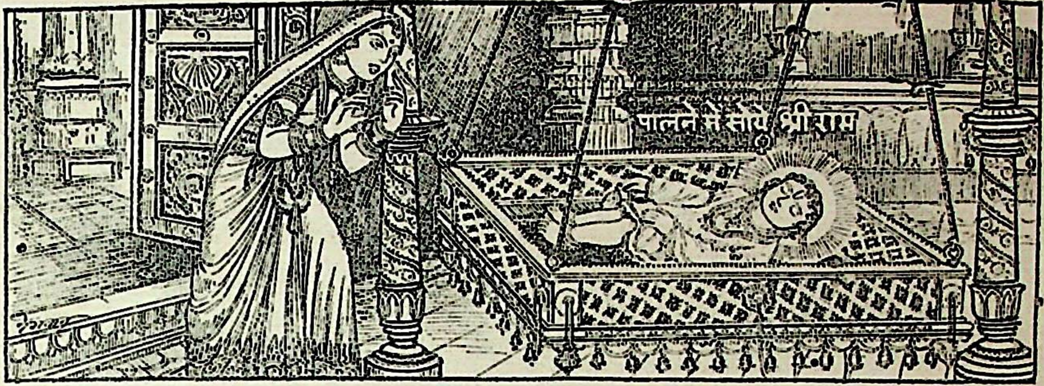

माता गई पालने पास । सोये राम वहाँ सुख-रासि ॥
माता चकित न जानै भेद । इनका भेद न जानैं वेद ॥

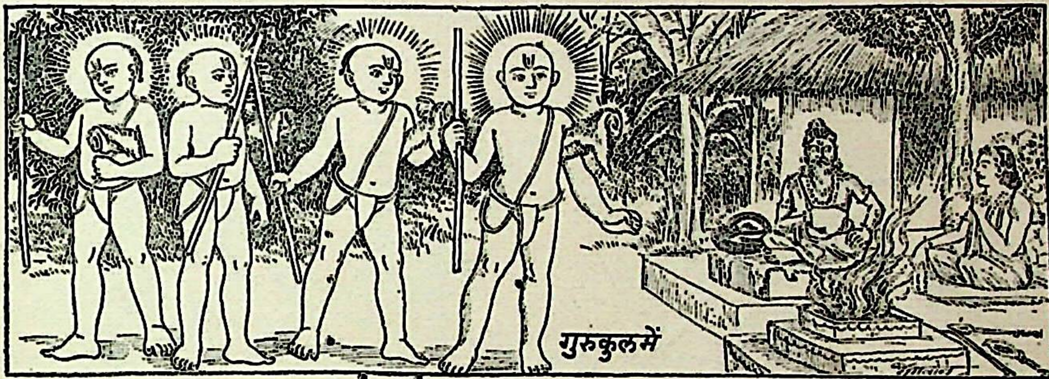

भरत शत्रुहन लक्ष्मण राम । पढ़ने आये गुरुकुल धांम ॥
रुचिर ब्रह्मचारी का वेष । धन्य धन्य हैं भारत देश ॥

चारो कुँवर चढ़ाये बाण । किया लक्ष्य पर शर सन्धान ॥
धनुर्वेदकी लेते शिक्षा । यह क्षत्रियकी पावन दीक्षा ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

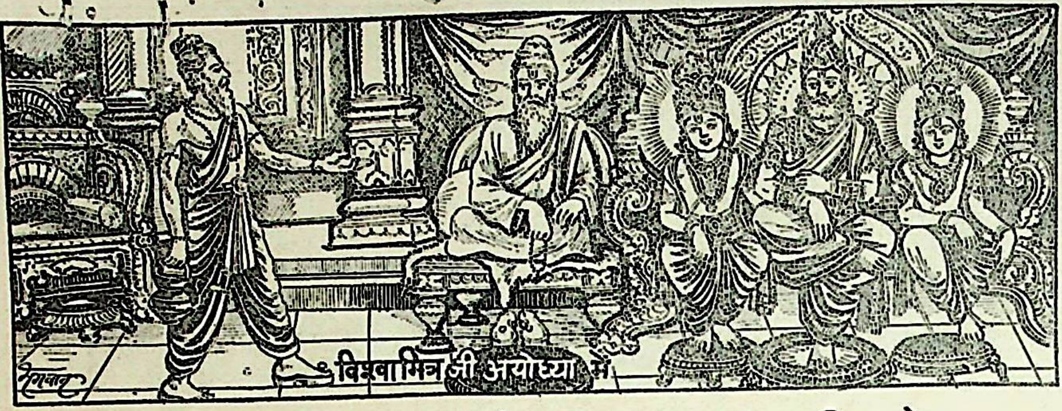

खल मारीच सुबाहु सताये। विश्वामित्र महामुनि आये ॥
राम लखन नृप हम कहँ दीजे । राखैं यज्ञ जगत यश लीजै ॥

पितु आज्ञासे श्रीरघुनाथ । मुनि सँग गये अनुज के साथ ॥
मार्ग मिली ताड़का कराल । एक बाणसे बींधा भाल ॥

जला सुबाहू राक्षस नीच । गिरा सिन्धु-तट जा मारीच ॥
मारे गये दैत्य सब घोर । मुनि मख राखा अवधकिशोर ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

राम लखन त्रिभुवनके भूप । इनकी श्रद्धा अमल अनूप ॥
जिनका ध्यान देवपति धरते । वे गुरुकी पदसेवा करते ॥

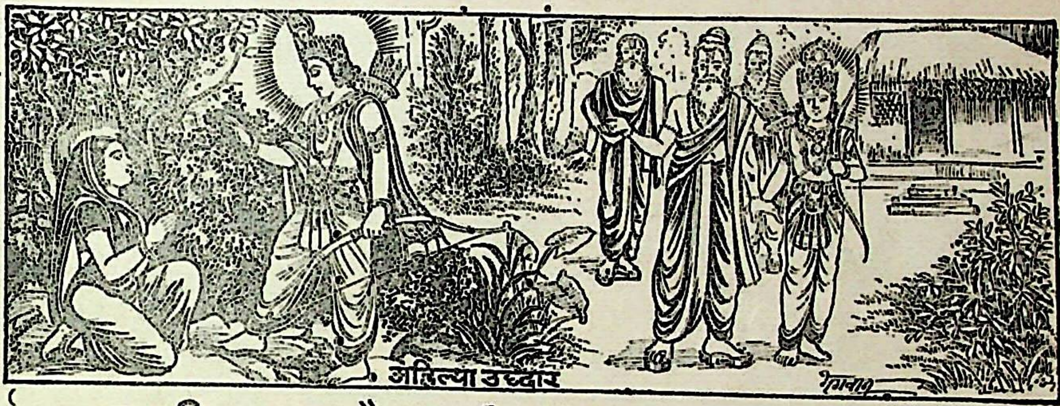

शाप विवश वह गौतम नारी । शिला अहिल्या थी बेचारी ॥
राम चरण-पंकज-रज पाई । मिटा शाप भइ नारि सुहाई ॥

राम लखन ये दोनों भाई । देखत जनक नगर सुखदाई ॥
लगे प्रेमबस बालक साथ । सबका मन रखते रघुनाथ ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

फुलवारीमें राम-लक्ष्मण

गुरु-पूजा-हित राम लखन। आये सुमन लेन उपवन ॥
गौरी पूजन सीता आई। लखे परसपर हिय हरषाई ॥

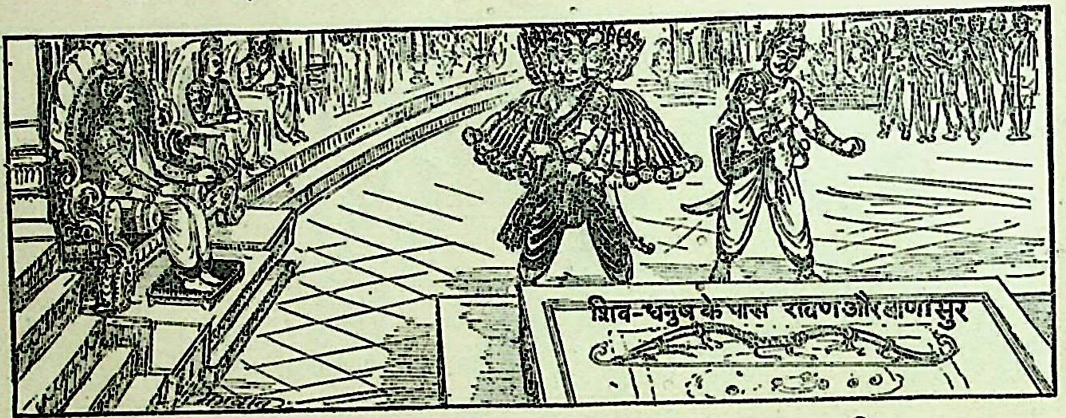

शिव-धनुष के पास रावण और बाणासुर

रावण बाणासुर बलवान। शिवधनु देखि गया अभिमान ॥
छू न सके गवने चुपचाप। कौन उठाता फिर यह चाप ॥

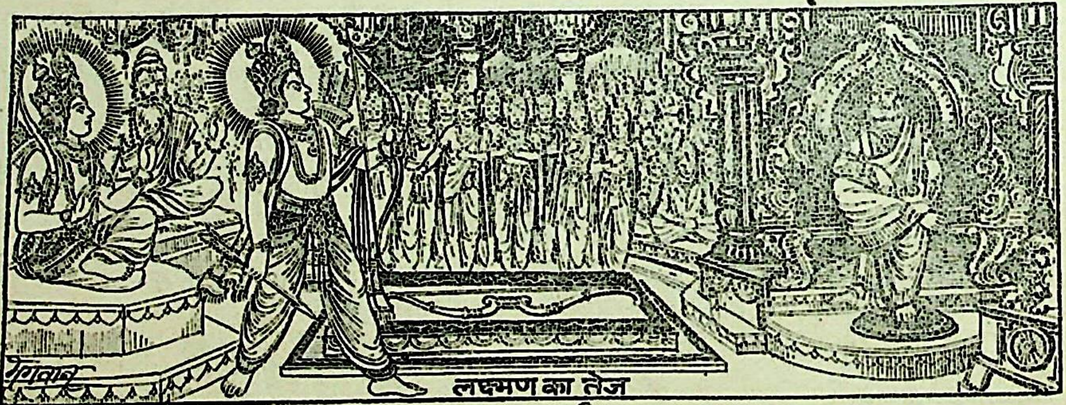

लक्ष्मण का तेज

जनक बचन-भू वीर विहीन। सहें लखन क्यों ओज प्रवीण॥
उठे क्रोधकर दी ललकार। काँपे राजा राजकुमार ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

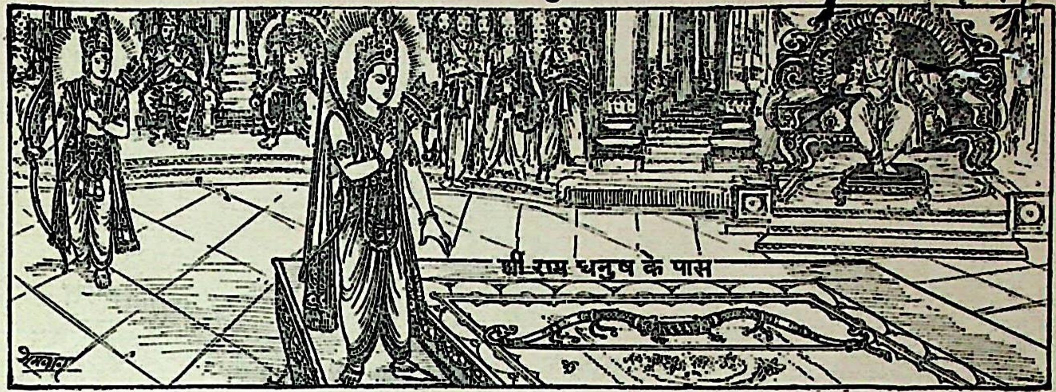

गुरु आज्ञा से श्री रघुनन्दन । उठे सहज कर पद-रज-वन्दन॥
आये पास पिनाक निहारे । सब नरेश अपने हिय हारे ॥

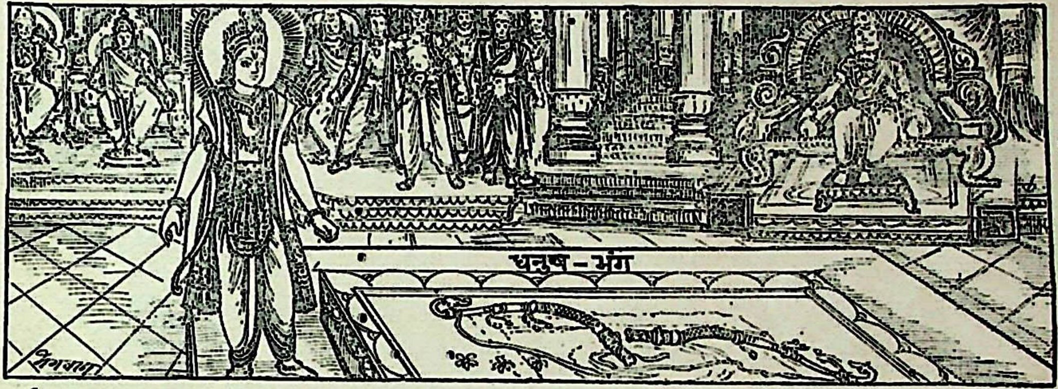

चाप उठाइ चढ़ाइ सम्हारा । खींच खंड दुइ करि महिडारा॥
खड़े खेल जिमि करि रघुराई । जय धुनि सकल गगन महँ छाई॥

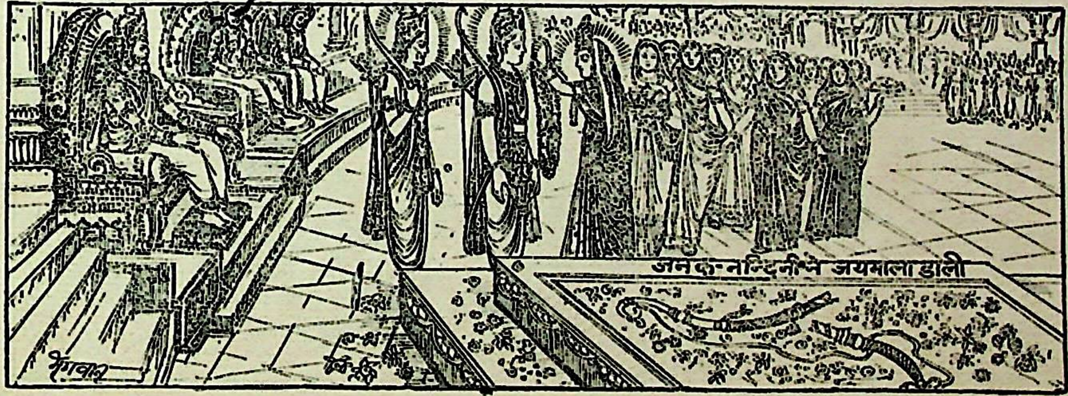

रंगभूमि आई वैदेही । संग सखी सब परम सनेही॥
उठी सुघर कर नव जयमाल । रघुवर सम्मुख रूप रसाल॥

वा० चि० रा० भा० १—२—

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

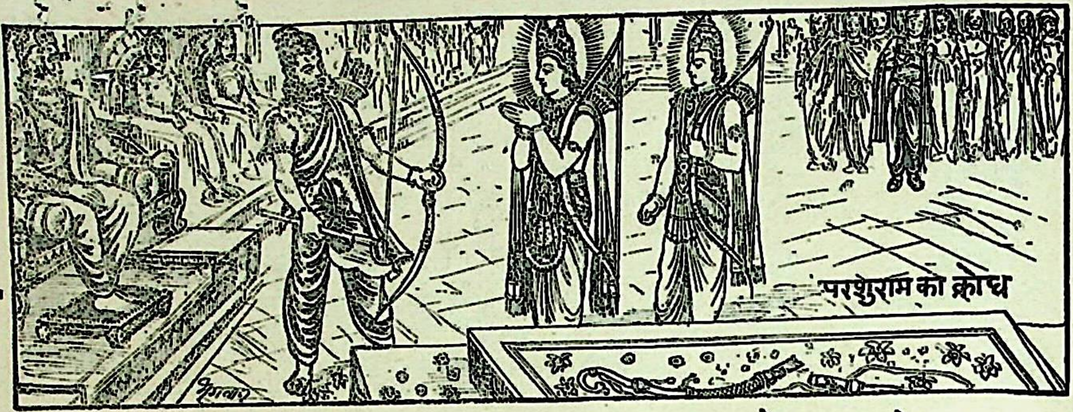

धनुषभंग सुनि भृगुपति आये । लोचन अरुन कोप तन छाये ॥
लखन ओज निधि, राम उदार । क्रोध यहाँ होगा निःसार ॥

परशुराम कर क्रोध अपार । थके राम का तेज निहार ॥
लज्जित हुये परम प्रभु जान । निज धनु दिया छोड़ सब मान ॥

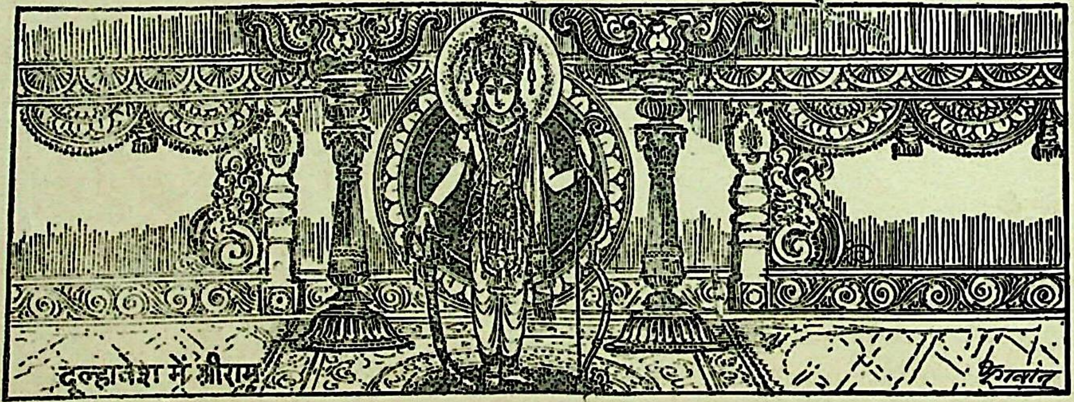

सुघर राम नयनभिराम ये । भूषण भूषित रूपधाम ये ॥
दूल्हावेश अनूप उदार । बसें हिये ये चिरसुकुमार ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

यह मन्थरा कपटकी खान । देती कैकेयिको निजज्ञान ॥
वनमें राम, भरतको राज । दो वर माँगो नृपसे आज ॥

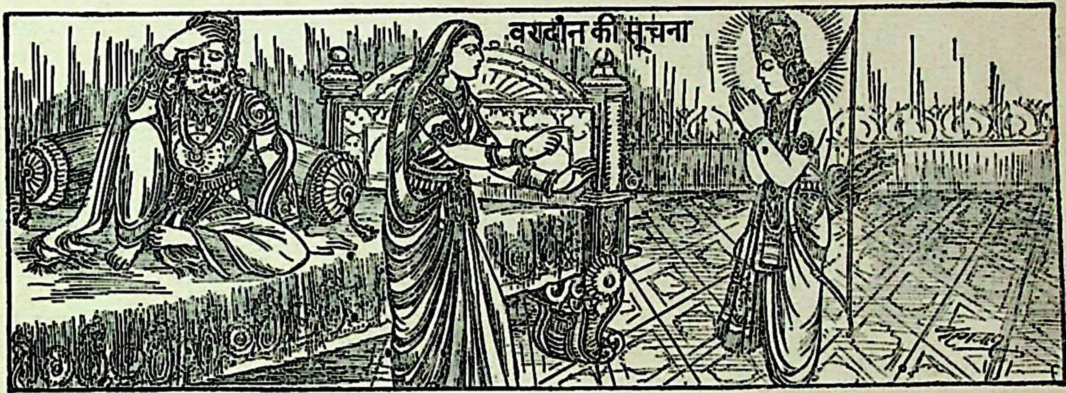

रानी कैकेयिके वरदान । नृप दशरथको शोकमहान ॥
हाथ जोड़ ज्यों लें उपहार । किया रामने वन स्वीकार ॥

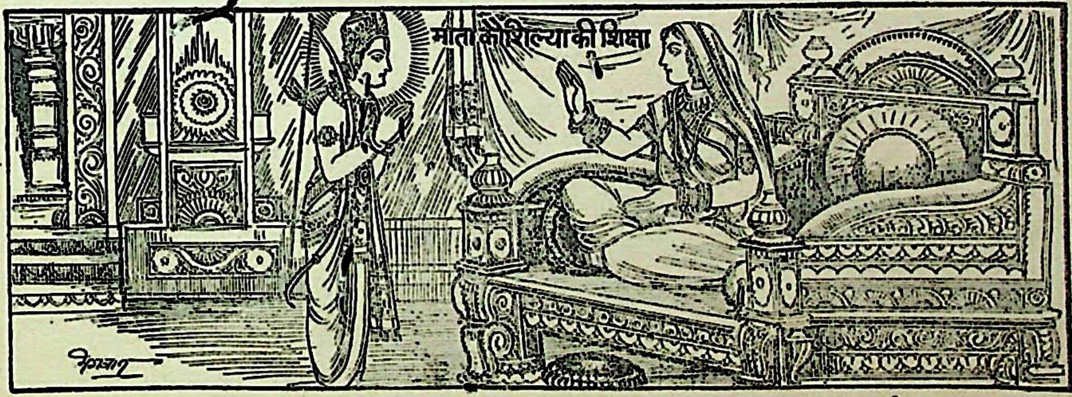

धन्य कौशल्या मातु महान । कहा-तुम्हें वन ही वरदान ॥
'करो पुत्र तुम समुचितकर्म । रक्षित रहे तुम्हारा धर्म' ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कैकेयी निज हिय हुलसाई । बलकल बसन कमंडलु लाई ॥
रामचन्द्रने जोड़े हाथ । सविनय लक्ष्मण सीता साथ ॥

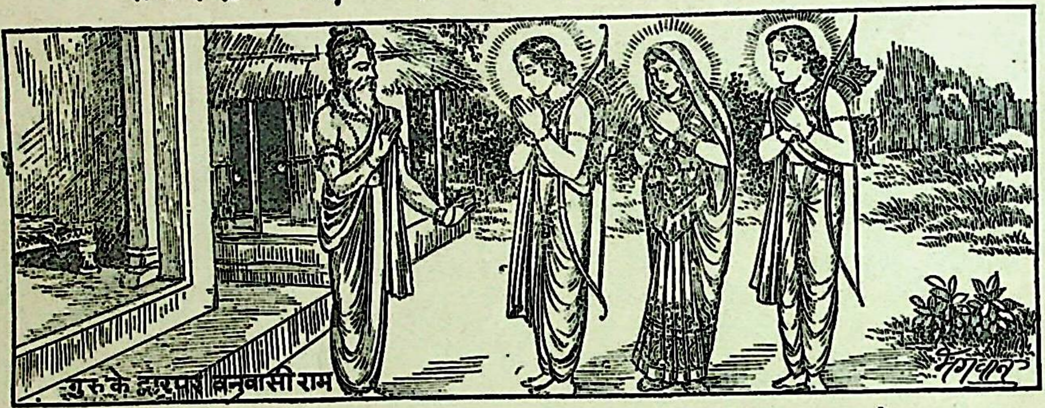

राम लखनसिय सहज सुहाये । चीर बसन मुनि वेष बनाये ॥
गुरु बसिष्ठके आश्रम आये । लखि मुनि के लोचन जल छाये॥

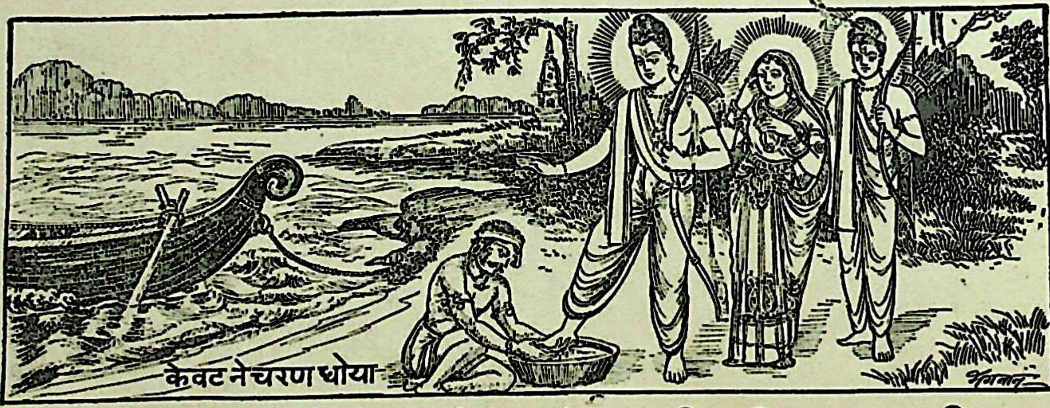

भरे कठौता निर्मल पानी । ले अनुमति कहि अटपट बानी॥
धोवत चरण उमगि अनुराग । धन्य धन्य केवट का भाग्य ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

जिनका लेकर नाम उदार । जन होते भवसागर पार ॥
अनुज सीय सँग सो रघुनाथ । बैठे नौका केवट साथ ॥

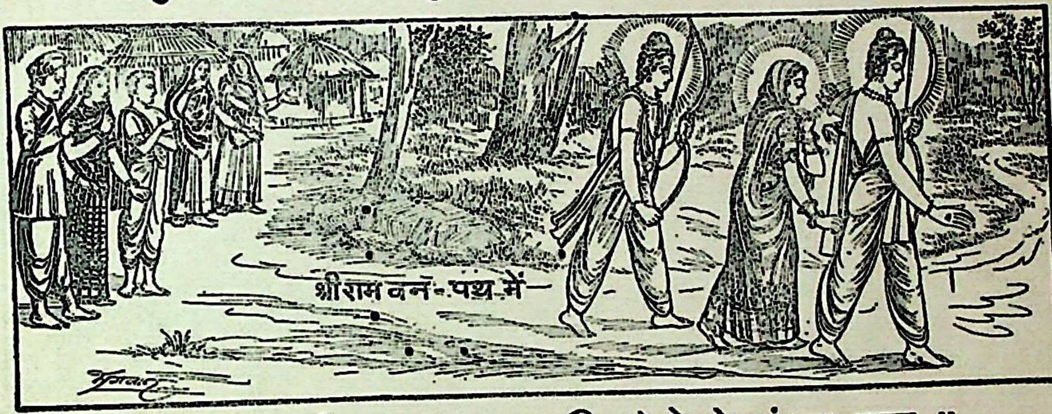

लखन राम सिय बनपथ जात । जिन देखे वे मंजुल गात ॥
भये ग्राम-जन प्रेम विभोर । लगे नयन मन प्रभु की ओर ॥

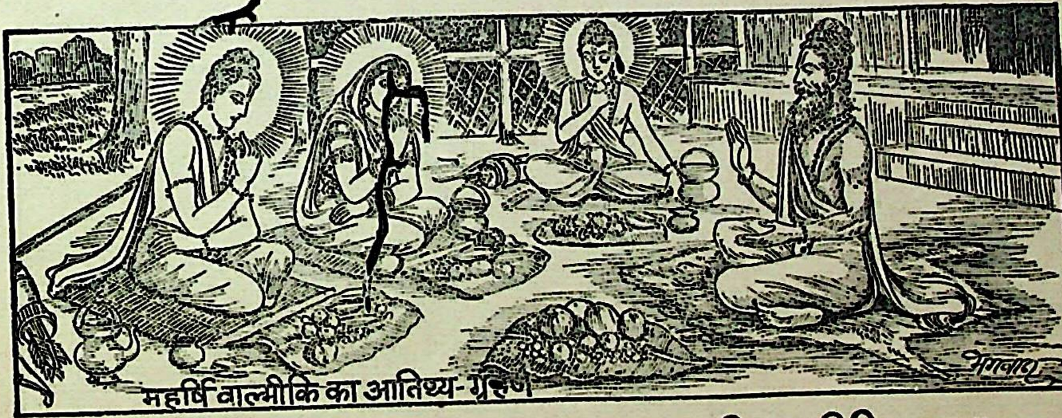

बाल्मीकि मुनि परम सुजान । राम लखन सिय अतिथि महान ॥
कन्द, मूल, फल, दिये सप्रेम । राम चाहते निर्मल प्रेम ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

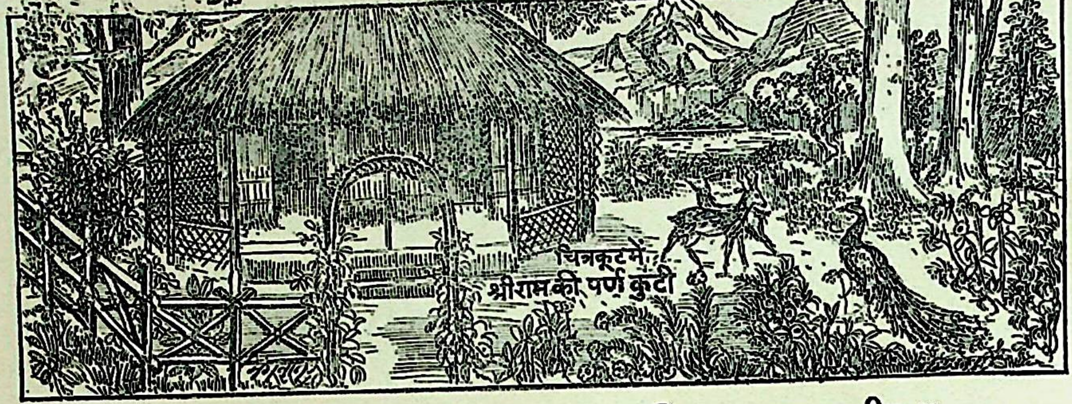

पयस्विनी का पावन तीर। खग मृग रुचिर सुमन्द समीर ॥
पर्णकुटी रघुबीर निवास । चित्रकूट शुभ सहज सुपास ॥

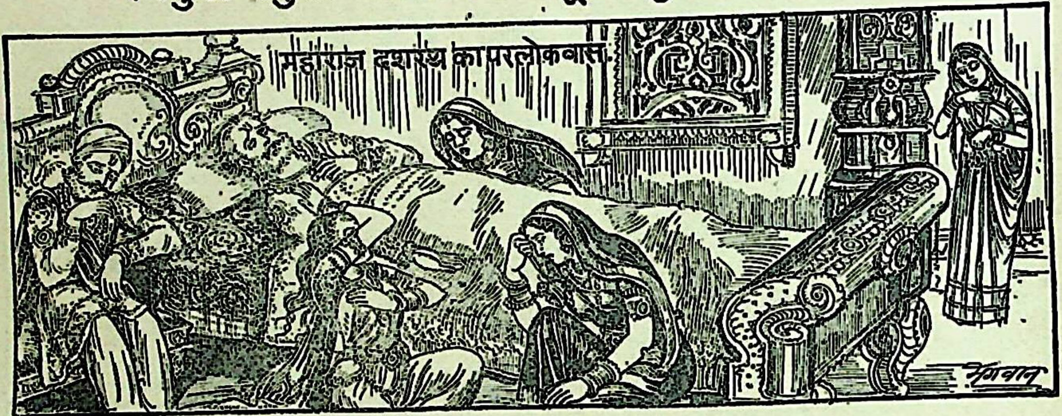

राम वियोग, हृदय धरि राम । कहते राम, राम, हा राम ॥
नृप दशरथ ने तजा शरीर । रोतीं रानी परम अधीर ॥

आये भरत छोड़ ननिहाल । देखा सारा अवध बेहाल ॥
मिला कैकेयी से संवाद । थकित हो रहे मगन विषाद ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

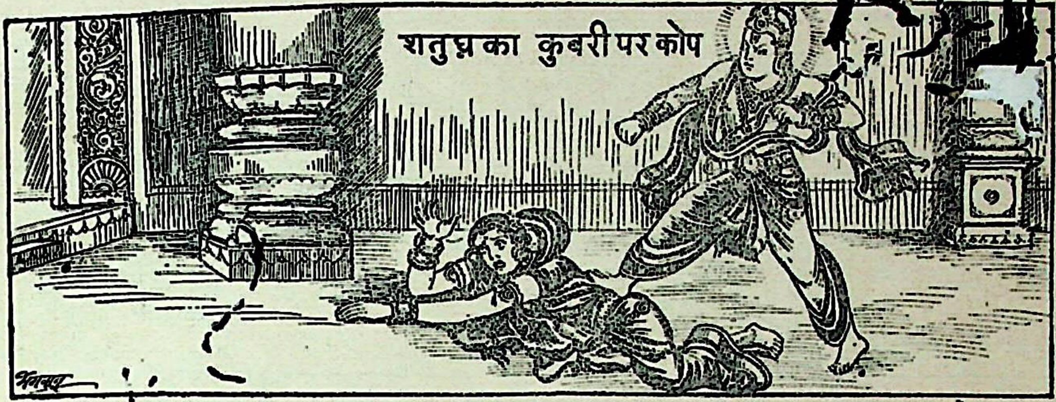

बेनी ठनी तहँ कुबरी आई । देखि शत्रुहन को रिस छाई ॥
हुमकि जमाई कूबर लात । रोकर गिरी टूट गये दाँत ॥

राम तिलकका साज सजाये । जाते चित्रकूट-पथ आये ॥
जानि निषाद कर रहा बन्दन । आये भरत त्याग निज स्यन्दन ॥

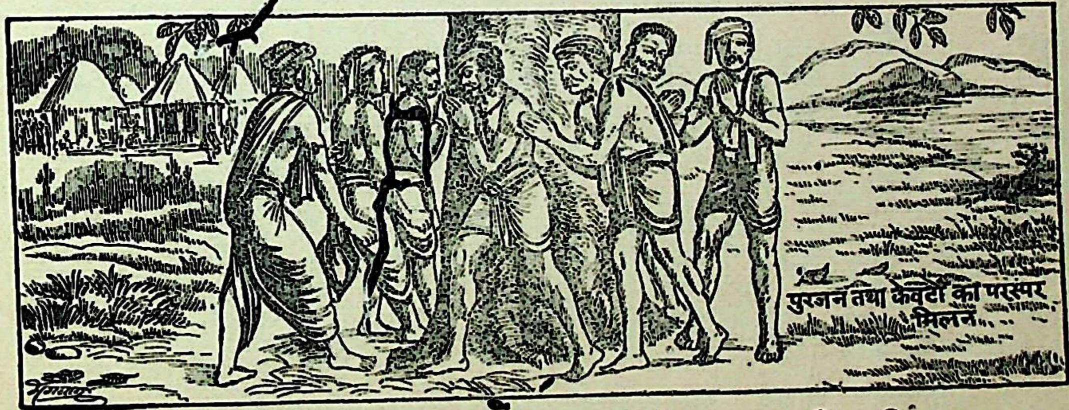

अवधपुरी जन परम पुनीत । जानि निषाद राम हित मीत ॥
मिलत परसपर करि संत्कार । यथा योग्य समुचित व्यवहार ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

चरण-चिह्नों की वन्दना

चरण चिन्ह मग देख रामके । बन्धु परम प्रिय कृपा धामके ॥
भरत चरण रज शीश लगावैं । प्रेम मगन तन दशा भुलावैं ॥

भरद्वाज मुनि के आश्रम में भरत

पहुँचे तीर्थराज थल पावन । भरद्वाज आश्रम मन भावन ॥
भरत शत्रुहन दोनों भाई । चरन परत मुनि लिये उठाई ॥

बन-पथ में भरत

बन पथ बीहड़ संग समाज । भरत बन्धु सँग पैदल आज ॥
चलत प्रेम बस हृदय अधीर । छन छन कहत राम रघुबीर ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

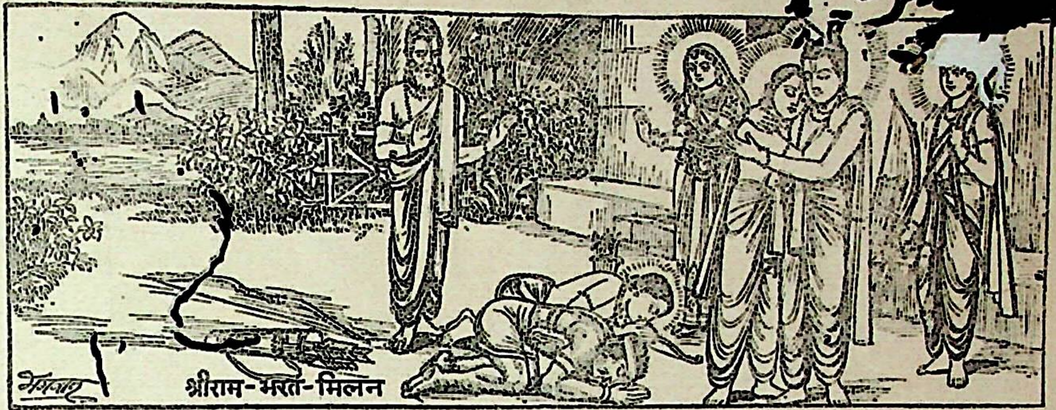

श्रीराम-भरत-मिलन

भुज भरि राम भरत हिय लाये। प्रणमत अनुज सखा सुखपाये ॥
भये लखन सिय प्रेम-विभोर । विथकित मुनि लखि अवधकिशोर ॥

मन्त्रणा-सभा

चित्रकूट सब जुड़ा समाज । मन्त्री, मुनिगन, मैथिलराज ॥
सानुज भरत नम्र कर जोरे । समुझाये रघुनाथ निहोरे ॥

भरत को पादुका-प्राप्ति

राम सत्यव्रत धर्मधुरीण । शुचि सेवाव्रत भरत प्रवीण ॥
दिली पादुका अवधि अधार। सिर धरि लीन्हीं भरत सम्हार ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

सुरपति सुत भी यह हत भाग । आया है जयन्त बन काग ॥
कोमल सियपद मारी चोंच । भ्रमवश इसे न फल का सोच ॥

छूटा राम बाण खग भागा । राम विमुख लख सबने त्यागा ॥
दुखी जयन्त शरण फिर आया । एक नयन दे प्राण बचाया ॥

आश्रम पावन ऋषिवर अत्रि । आये राम सीय सौमित्र ॥
अर्पित कर फल कर सत्कार । विनय करत ऋषि बारम्बार ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

बालकोपयोगी पाँच पुस्तकें

मूल्य पैसे

१—बालकके गुण—संसारमें गुणोंकी ही पूजा होती है। अच्छे गुण ही जीवनको उन्नत एवं सुखी बनाते हैं। इस छोटी-सी पुस्तकमें ऐसे ही कुछ गुणोंकी चर्चा की गयी है तथा चित्रोंद्वारा भी उनपर प्रकाश डाला गया है। पृष्ठ-संख्या ४८, सुन्दर रंगीन मुखपृष्ठ .... २[illegible]

२—बालकोंकी बोलचाल—इसमें बालकोंको दैनिक व्यवहारकी शिक्षा दी गयी है। पृष्ठ-संख्या ४८, सुन्दर दोरंगा आर्ट-पेपरपर छपा मुखपृष्ठ २०

३—बालकोंकी सीख—इस छोटी-सी पुस्तकमें छोटे-छोटे वाक्योंमें बालकोंके मनपर उत्तम संस्कार डालनेवाली बहुत-सी कामकी बातें दी गयी हैं। पृष्ठ-संख्या ४०, आर्ट-पेपरपर छपा सुन्दर मुखपृष्ठ १५

४—बालकके आचरण—बालकके आचरण कैसे होने चाहिये, यही इस छोटी-सी पुस्तकमें दिखाया गया है। पृष्ठ-संख्या ४०, सुन्दर आकर्षक मुखपृष्ठ १५

५—बालककी दिनचर्या—बालक कैसे जागे, कैसे सोये और जागनेके समयसे लेकर सोनेतक क्या-क्या और कैसे-कैसे करे—यही इस छोटी-सी पुस्तकमें संक्षेपतः बताया गया है। पृष्ठ-संख्या ४०, सुन्दर दोरंगा मुखपृष्ठ १५

व्यवस्थापक—गीताप्रेस, पो॰ गीताप्रेस (गोरखपुर)

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi